Dr. Kumari Priyanka

History department

H.D Jain college, ara

Notes for BA part 3, paper 5

Topic:-सल्तनत कालीन स्थापत्य-कला(Architecture under Sultanate)

सल्तनत-युग में सबसे अधिक प्रगति स्थापत्य-कला के क्षेत्र में हुई। दिल्ली के सुल्तानों प्रांतीय शासकों, अमीरों और अन्य संपन्न एवं कुलीनवर्गीय लोगों ने विशाल एवं सुन्दर इमारतें, महल, मीनार, दुर्ग मस्जिद इत्यादि बनवाए। इन भवनों का निर्माण साधारणतः सहज उपलब्ध ईंटों एवं पत्थरों की सहायता से हुआ। इस समय कला की जिस विशिष्ट शैली का विकास हुआ, भारतीय-इस्लामी स्थापत्य कला (Indo-Islamic Architecture) के नाम से जानी जाती है। इसके विकास में शाही कला, प्रांतीय कला एवं हिंदू स्थापत्य कला का योगदान है। भारतीय-इस्लामी स्थापत्य शैली का विकास विभिन्न चरणों में हुआ। 'ममलूक-शैली' अथवा आरंभिक शैली प्रयोगात्मक थी। इसमें पहले की बनी कला का स्पष्ट प्रभाव है। इस शैली में कुतुबमीनार पहली इमारत थी जिसमें इस्लामी प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। इल्तुतमिश के मकबरे में इस्लामी एवं भारतीय शैली का सम्मिश्रण पाया जाता है। खिजली काल में स्थापत्य कला पर इस्लामी प्रभाव अधिक सुदृढ़ हो गया। इसमें पहली बार गुंबदों का निर्माण हुआ। खिजलौकालीन भवनों में अलंकरण पर विशेष बल दिया गया। तुगलक काल में पहले के अलंकरण एवं सजावट की परंपरा बनी रही परंतु इनमें आर्थिक दुर्बलता भी झलकती है। इस काल की इमारतों में इस्लामी और भारतीय शैलियों का पूर्ण समन्वय हुआ। यह प्रक्रिया क्षेत्रीय स्थापत्य कला में भी दिखाई देती है। सैय्यद और लोदी शासनकाल में स्थापत्य कला को अवनति हुई।

शाही स्थापत्य कला- दिल्ली के सुल्तानों ने अपने निवास, पूजा एवं सामरिक आवश्यकताओं के लिए महलों, मस्जिदों एवं दुर्गों का निर्माण करवाया। सल्तनतकालीन पहली मस्जिद है कुवत-उल-इस्लाम', जिसका निर्माण दिल्ली के निकट कुतुबुद्दीन ऐबक ने किया। यह कुतुबमीनार के निकट स्थित थी। पहले के जैन एवं विष्णुमंदिर का रूपांतरण कर इसे मस्जिद का स्वरूप प्रदान किया गया। 'ढाई दिन का झोपड़ा' भी ऐबक ने ही बौद्ध विहार को परिवर्तित कर अजमेर के निकट बनवाया। उसने कुतुबमीनार का निर्माण कार्य भी आरंभ किया, परंतु इसे वह पूरा नहीं करवा सका। इसे पूरा करवाने का श्रेय इल्तुतमिश को एवं इसके जीर्णोद्धार का श्रेय फीरोज तुगलक को दिया जाता है। इसे दिल्ली के सूफी संत बख्तियार काकी की स्मृति में बनवाया गया था। इल्तुतमिश ने 'सुल्तानगढ़ी', बदायूँ को 'आधा मस्जिद' एवं नागौर का 'अतरकीन दरवाजा भी बनवाया। बलबन ने 'लाल महल एवं अपना मकबरा बनवाया। खिलजी-काल में स्थापत्य कला का अधिक विकास हुआ। अलाउद्दीन खिलजी ने नई राजधानी सीरी में बनवाई, जो

कुतुबमीनार के निकट थी। उसके समय का सबसे महत्त्वपूर्ण स्मारक 'इलाही दरवाजा' या 'अलाई दरवाजा' है, जो कुतुबमीनार से संबद्ध है। गयासुद्दीन ने तुगलकबाद में अनेक भव्य महल बनवाए। उसने अपना भव्य मकबरा भी बनवाया। मुहम्मद बिन तुगलक ने जहाँपनाह नगर एवं आदिलाबाद का दुर्ग बनवाया। तुगलक-काल में सबसे अधिक स्थापत्य कला की प्रगति फीरोज तुगलक के समय में हुई। फीरोजाबाद और फीरोजशाह कोटला के निर्माण के अतिरिक्त उसने अनेक भव्य महल, मस्जिद झील इत्यादि का निर्माण करवाया। अफगानों ने अधिकांशतः मस्जिदों एवं मकबरों का निर्माण करवाया। अफगानी मस्जिदों में प्रमुख है- बड़ी गुम्बद मस्जिद, मोठ मस्जिद, जमाली-कलानी मस्जिद इत्यादि। सल्तनत-युग में अनेक भव्य मकबरे भी बने। इनमें गयासुद्दीन एवं फीरोज तुगलक के मकबरे, लाल गुंबद, पीली गुंबद, सादी गुंबद, शीश गुंबद इत्यादि अधिक विख्यात है। सल्तनतकालीन इमारतों की प्रमुरन विशेषता है सजावटी मेहराबों एवं गुंबदों का निर्माण। इस काल में इमारतों को भित्तिचित्रों एवं अलंकरणों से सुसज्जित किया जाता था, परंतु इनमें मानव-चित्रों के स्थान पर कुरान की आयतों, ज्यामितीय रेखाओं और वानस्पतिक चित्रों का ही सहारा लिया गया।प्रांतीय स्थापत्य कला-सल्तनत काल में शाही स्थापत्य कला के अतिरिक्त क्षेत्रीय या प्रांतीय स्थापत्य-कला का भी विकास हुआ। इसका विकास प्रांतीय शासकों के संरक्षण के कारण हुआ। प्रांतीय शैली भी शाही शैली से प्रभावित थी,परंतु इनपर स्थानीय शैलियों का भी प्रभाव पड़ा। इस काल में सुंदर भवन बनवाए गए, परंतु वे उतने भव्य नहीं थे, जितने कि शाही भवन। मुल्तान, बंगाल, जौनपुर, मालवा, गुजरात, कश्मीर और बहमनी राज्य में अनेक भवनों का निर्माण हुआ। प्रांतीय स्थापत्य कला के अंतर्गत "बंगाल में रंगीन ईटों और खपड़ों का प्रयोग किया गया तथा ढलवाँ छते बनवाई गईं। गुजरात और मालवा में बावलियों और पत्थर की सुंदर जालियों का निर्माण हुआ, जौनपुर में प्रवेश द्वारों को विशेष आकर्षक एवं विशाल बनाया गया और दक्षिण में गुंबदों तथा मीनारों के निर्माण में अधिक रुचि दिखाई गई।"मुलतान में सल्तनत काल के दौरान अनेक मकबरे बने। इनमें प्रमुख हैं 'शाह युसूफ उल गर्दिजी' बहौल-हक, शम्सुद्दीन और रुने आलम के मकबरे। जौनपुर के शर्की-सुलतानों ने इस काल में अनेक इमारतें बनवाई। इन भवनों में हिंदू-मुस्लिम-कला का सामंजस्य देखा जाता है। शर्की-शैली के भवनों में भारी बलों दीवारें, वर्गाकार स्तंभ, छोटे गलियारे, कलात्मक मेहराबें, प्रवेशद्वार एवं दीवारों में आले बनवाए गए। मीनारों का निर्माण इन भवनों में नहीं हुआ। जौनपुर की प्रसिद्ध मस्जिदों में फोर्ट मैस्जिद, छनछोरी मस्जिद, अटाला मस्जिद, लाल दरवाजा मस्जिद एवं जामा मस्जिद है। मालवा मैं मांडू का किला, हिंडोला महल, जहाज महल, अशी महल, बाजबहादूर और रानी रूपमती का महल तथा अलाउद्दीन खिलजी का विजयस्तम्भ शको स्थापत्यकला का सर्वोत्तम नमूना पेश करते हैं। बंगाल में भी अनेक इमारतें बनीं। बंगाल में छोटे स्तंभों एवं नुकीली मेहराबों वाले भवन बने। बंगाल की इमारतों में प्रमुख हैं। अदीना मस्जिद, पांडुआ का एकलाखी मकबरा, गौड़ की लोटन मस्जिद एवं सोना मस्जिद । गुजरात को स्थापत्यकला हिंदू एवं जैन स्थापत्यकला से अधिक प्रभावित थी। इन भवनों में लकड़ी पर नकाशी, पत्थर की आालियों, झरोखों एवं सुंदर अलंकारों का व्यवहार हुआ। गुजरात की उल्लेखनीय इमारतें हैं।काम्बे की जामा मस्जिद, अहमदाबाद की जामा मस्जिद, तीन दरवाजा, दोलका मस्जिद एवं रानी का हुजरा। महमूद बेगड़ा ने चम्पानेर में अनेक भव्य भवन बनवाए। कश्मीर में पत्थर एवं काष्ठनिर्मित इमारतें बनीं। कश्मीरी शैली का

विकास हिंदू-मुस्लिम कला के सामंजस्य से हुआ। कश्मीरी कला का विकास मंदनी मकबरा, जामी मस्जिद एवं शाह हमरान की मस्जिद में देखा जा सकता है।

बहमनी राज्य के अंतर्गत गुलबर्गा और बीदर में अनेक मस्जिदें बनवाई गईं। मुहम्मद आदिलशाह का मकबरा, गोल गुंबद दौलताबाद का मीनार एवं महमूद गंवा का विद्यालय इस काल की प्रमुख इमारतें हैं।

हिंदू-स्थापत्यकला-हिंदू-शासकों एवं सामंतों ने भी अनेक भवनों एवं मंदिरों का निर्माण राजस्थान, विजयनगर, दक्षिण भारत एवं उसा हिंदू-स्थापत्यकला के प्रमुख केंद्र थे।

यद्यपि विशुद्ध भारतीय शैली में इन भवनों का निर्माण हुआ, तथापि इस्लामी कला का भी कुछ प्रभाव इनपर दृष्टिगोचर होता है। राजपूताना में अनेक महल, दुर्ग एवं विजयस्तंभ बने। मेवाड़ के राणा कुम्भा ने कुम्भलगढ़ दुर्ग और चित्तौड़ का विजयस्तंभ बनवाया। ग्वालियर का किला एवं मानसिंह तोमर का मानमंदिर अत्यंत ही भव्य और आकर्षक थे।विजयनगर-राज्य एवं उड़ीसा में भी अनेक भव्य और सुंदर भवन तथा मंदिर बनवाए गए। सुंदर नगर के रूप में विजयनगर की बड़ी ख्याति थी। कृष्णदेवराय का विठ्ठलस्वामी मंदिर मंदिर-स्थापत्यकला का उत्कृष्ट नमूना है। दक्षिण भारत में भी अनेक भव्य मंदिर बने।